4.3. जैनदर्शन के अनुसार द्रव्य-सिद्धांत *(The Jain Theory of Dravya or Substance)*

जैनदर्शन के अनुसार वस्तुओं में असंख्य गुण रहते हैं। इनमें कुछ नित्य (eternal) रहते हैं और कुछ गुण अनित्य (non-eternal) रहते हैं। नित्य या स्थायी वस्तुओं के आवश्यक गुण हैं और ये उनका स्वरूप निर्धारित करते हैं। अनित्य या अस्थायी वस्तुओं के आकस्मिक गुण हैं और इनके अभाव में भी वस्तुओं की कल्पना संभव है। चेतना जीव का आवश्यक गुण है, किंतु सुख-दुःख, हर्ष-विषाद आदि इसके आकस्मिक गुण हैं। जैनदार्शनिक आवश्यक गुण को 'गुण' और अनावश्यक या आकस्मिक गुण को 'पर्यय' कहते हैं।

Scanned with CamScanner

जैनदर्शन के अनुसार, "द्रव्य वह (पदार्थ) है, जिसमें गुण और पर्यय हों।"[1] गुण वस्तु का आवश्यक धर्म है और पर्यय उसका अनावश्यक या आकस्मिक धर्म। द्रव्य गुणों या धर्मों का आधार माना जाता है। द्रव्य के अभाव में गुणों का अस्तित्व कायम नहीं रह सकता। इसी प्रकार, गुणों के आधार (substratum) के रूप में द्रव्य को स्वीकार किया गया है।

जैनदर्शन का द्रव्य संबंधी विचार अनूठा है। साधारणतः द्रव्य को आवश्यक गुणों का ही आधार बताया जाता है। किंतु, जैनों के अनुसार द्रव्य में आवश्यक एवं अनावश्यक दोनों प्रकार के गुण पाए जाते हैं। वेदांती ब्रह्म की नित्यता पर जोर देते हैं और बौद्ध विश्व की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता पर जोर देते हैं। किंतु, जैनविचारक इन दोनों को एकांगी बताकर नित्यता और नश्वरता दोनों का समर्थन करते हैं। इसका प्रमाण इनके द्वारा द्रव्य में नित्य और अनित्य गुणों का समर्थन कहा जा सकता है।

द्रव्य के प्रकार—जैनों के अनुसार द्रव्य (substance) के दो प्रकार हैं—1. शरीरधारी या अस्तिकाय (Extended) और 2. अशरीरी या अनस्तिकाय (Non-extended)। अस्तिकाय या शरीरधारी द्रव्य जगह घेरते हैं, किंतु अनस्तिकाय या अशरीरी द्रव्य जगह नहीं घेरते। अशरीरी द्रव्य एक ही है और यह है 'काल'। किंतु, शरीरधारी द्रव्यों की संख्या अनेक है। इनके दो प्रकार हैं—1. जीव या आत्मा और 2. जड़ या अजीव। जीव के दो भेद हैं—मुक्त (Liberated) और बद्ध (In bondage or bonded)। मुक्त जीव वे हैं, जिन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। बद्ध जीव वे हैं, जो अभी तक बंधनग्रस्त हैं। बद्ध जीव के दो प्रकार हैं—(गतिमान mobile) और गतिहीन (immobile)। गतिहीन जीव एक इंद्रियवाले हैं। वनस्पति के जीव इसी के उदाहरण हैं। गतिमान जीवों में दो से पाँच तक इंद्रियाँ रहती हैं। कीड़े, चींटी, भौंरे और मनुष्य को क्रमशः दो, तीन, चार एवं पाँच इंद्रियाँ रहती हैं।

जड़ या अजीव के चार प्रकार हैं—धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल। अब इनपर संक्षेप में विचार किया जा रहा है—

(a) **धर्म**—जैनदर्शन में 'धर्म' को विशेष अर्थ में लिया गया है। साधारणतः, 'धर्म' का अर्थ पुण्य (virtue) माना जाता है। किंतु, जैनों के अनुसार धर्म वह है, जो वस्तु को गतिशील बनाए रखने में मदद पहुँचाता है उदाहरण—पानी मछली को तैरने में मदद पहुँचाता है। इसलिए पानी धर्म है।

(b) **अधर्म**—साधारणतः 'अधर्म' का अर्थ है 'पाप' (vice)। किंतु, जैनों ने इस पद का प्रयोग विशेष अर्थ में किया है। यहाँ 'अधर्म' उसे कहा गया है, जो किसी वस्तु को स्थिर या विराम में रखने में सहायक है। उदाहरणार्थ, पंखे के नीचे बैठने से नींद आने लगती है। इसलिए, पंखे की हवा अधर्म का उदाहरण है। यहाँ अधर्म धर्म का विरोधी है।

(c) **पुद्गल**—जिसे हम साधारणतः भूत (matter) कहते हैं, वही जैनों के लिए पुद्गल है। पुद्गल का प्रधान लक्षण इसका संयोजन और विभाजन माना गया है। भौतिक द्रव्य ही जैनों के अनुसार पुद्गल हैं। पुद्गल या तो अणु के रूप में रहता है या स्कंध (compound) के रूप में। किसी वस्तु का विभाजन करते-करते जब हम ऐसे अंश पर पहुँचते हैं, जिसका विभाजन नहीं किया जा सके, तो इसे ही अणु (atom) कहते हैं। स्कंध दो या दो से अधिक अणुओं के संयोग से बनता है। जैन-विचारक शब्द को पुद्गल का गुण नहीं मानते। रूप, रस, गंध और स्पर्श से युक्त द्रव्य पुद्गल कहलाते हैं।

(d) **आकाश**—धर्म, अधर्म, जीव एवं पुद्गल जैसे अस्तिकाय द्रव्यों को स्थान प्रदान करनेवाला आकाश है। आकाश के बिना विस्तारयुक्त द्रव्यों के रहने के लिए जगह नहीं मिल सकती। आकाश ही अस्तिकाय (extended) द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश भी दो प्रकार का है—'लोकाकाश' और 'अलोकाकाश'। लोकाकाश जीव पुद्गल, धर्म एवं अधर्म का निवास-स्थान है। अलोकाकाश इस जगत से परे है।

Scanned with CamScanner

काल (time) अनस्तिकाय (non-extended) द्रव्य का उदाहरण है। यह स्थान नहीं घेरता। द्रव्यों की क्रियाशीलता (movement) और इनके परिणाम (modification) की व्याख्या काल के माध्यम से ही संभव है। इसी प्रकार, प्राचीन-नवीन, पहले-बाद इत्यादि की व्याख्या भी काल के आधार पर ही की जा सकती है। काल के दो प्रकार हैं—(1) व्यावहारिक काल (Empirical Time) और (2) पारमार्थिक काल (Transcendental Time)। व्यावहारिक काल को साधारणतः समय कहा करते हैं। इसका आरंभ और अंत (beginning and end) दोनों होते हैं। वर्ष, महीना, दिन, घंटा, मिनट, सेकंड, पल इत्यादि व्यावहारिक काल के उदाहरण हैं। पारमार्थिक काल अनादि एवं अनंत है। यह नित्य एवं अमूर्त है; इसका विभाजन संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner